2-12-67 ओमशांति रात्रीक्लास

जब भी किसको समझाते हैं तो यह समझाना है कि भक्तिमार्ग दुब्बण है। कितना हंगामा है। ज्ञान में तो चुप रहना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। कर्म करते भी अपने को आत्मा समझ और अपने धाम को याद करना है। अंत में और कोई भी याद ना रहे। समझाने वाले बड़े अच्छे चाहिए। समझाने वाले कच्चे होंगे तो वो भी प्रजा बनेगी। पक्के होंगे तो वो भी प्रजा बनेगी। अनुभव सब बच्चों ने सुनाया। कहेंगे कि यहीं तक दुब्बण में थे। बाकी चोटी जाकर रही थी। अभी तुमको तो ब्राह्मण बन सबको दुब्बण से निकालना है। धीरे2 करते डूबे हैं। निकाल तो झट सकते हैं। डूबने में आधा कल्प और निकालने में एक जन्म लगता है। बच्चे समझते हैं कि कितना सहज निकलना होता है। टाइम लगता है। निकलने में एक सेकेंड। समर्थ है ना। डरना वा मूंझना ना है। बहुत सहनशील चाहिए। बाबा बहुतों को देखते हैं मूड बहुत जल्दी बिगड़ जाता है। मूड बिगड़ने वाले कभी सुधरते नहीं हैं। थोड़ी2 बात पर फंक हो जाते हैं। थोड़ी2 बात पर फंक हो जाते हैं। फिर तो सुधारना भी मुश्किल हो जाता है। फिर पद भी कम हो जाता है। नहीं तो बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। समझते हैं कि बाप के बने हैं। वो ही बाप ,टीचर,गुरू और टीचर है। तीनों की मदद से हमको पार जाना है। तीनों की शक्ति एक में ही आ जाती है। तुम जानते हो कि बेहद की राजधानी स्थापन हो रही है। फिर पद के पुरुषार्थ करना है। यहां से ट्रांसफर होते हैं। इसकी खुशी बहुत होनी चाहिए। बाबा भी रोज कहते हैं कि बच्चों तुम पदम भाग्यशाली बनते हो। तुम्हारी कमाई बहुत उंची है। उंच ते उंच भगवान उंचं ते उंचे शिवबाबा सौदागर। इसलिए प्रदर्शनी में भी पहले2 यह बताओ कि बाबा कहते हैं कि मुझे याद करो ,जिससे पवित्र बन वर्सा पा लेंगे। इतनी सहज बात भी पता नहीं कि क्यों नहीं समझते हैं। नहीं तो समझाना बहुत सहज है। बेहद का बाबा बेहद का वर्सा देंगे। ब्रह्मांड भी बेहद ही है ना। समझाने समय चेहरे में खुशी होनी चाहिए। अच्छा। 5.12.67रात्रीक्लास– बाप जो ज्ञान सुनाते हैं बाप अच्छी रीत जानते हैं। ब्राह्मण बच्चे यह भी जानते हैं पवित्र भल रहते हैं ;परंतु ज्ञान का नशा नहीं। जो मिला सो अच्छा। यह तो कल्प2 की बाजी है। बच्चों को खुद खुशी भी रहती है। कलकत्ते में भी अच्छे2 बच्चे हैं। अच्छी ही मददगार रहती है। बच्चे हुल्लास में रहते हैं तो अपन को मददगार जाने तो हम क्या करते हैं। जिनको करते हैं वो जाने कि कौन क्या मदद करते हैं। सबको मालूम नहीं पड़ सकता। देने वाले भी खुश होते हैं कि हम देते नहीं हैं ;किंतु लेते हैं। सर्विस में बिजी रहने से खुशी रहती है। बाबा को समाचार तो देते हैं ना। जहां कम सर्विस इतना लाभ नहीं निकलता तो समझाया जाता है कि ऐसे2 करो। छोटी दुकान नहीं है। पहले छोटी दुकान फिर बड़ी बनती है। सेल्समैन का समाचार जाता है कौन अच्छी बिक्री करते हैं। पहले2 जो दुकान में चढ़ते हैं तो पहले हज्का काम सफाई आदि करने का जोर देते हैं। जो अच्छी बिक्री करते होंगे,धंधा चलाते होंगे, इनका समाचार सेठ पास जावेगा। यहां भी ऐसे है कि करने वालों का नाम होता हैं। स्टुडेंट फिर मेजर,भागीदार सेठ बनेंगे। यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का व्यापार है। इसमें जितनी कमाई है और इतनी किसमें भी नहीं है। तुम जानते हो कि जो अच्छी सर्विस करते हैं उनकी कमाई भी वैसे ही अच्छी होती है। सर्विस करने वाले को बाप भी प्यार करते हैं। जो कुछ भी नहीं करते हैं उनका नाम भी दिल पर नहीं रहता है। नाम बाला करना चाहिए बच्चों को। हैंड्स की डिमांड बहुत है। सर्विस करने वाले कम हैं। दिलपसंद नहीं हैं। इसलिए अब क्लास भी कोचिंग लिए निकलाते हैं। सो भी बहुत सम्भाल रखनी पड़ती है। आज की दुनियां में गुंडे की बाजी कितनी है। ऐसे बच्चों की सम्भाल बहुत चाहिए। खुशी में रहना चाहिए। यह तो सब समझते हैं कि हम नई दुनियां में जाते हैं। दुनियां बदलती है बच्चों को ही मालूम पड़ता है। दुनियां तो बदलती है ;परंतु हम क्या पद पावेंगे। इसके लिए कोशिश की जाती है। हम अच्छा पुरुषार्थ करते हैं तो कल्प2 अच्छा पद मिलेगा। समझते है। कि नई दुनियां में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पद मिलता है। पुरुषार्थ ना होने से पद कम। समझ में आता है कि सतयुग में रावण है नहीं। इसलिए वहां सुख है ;परंतु नम्बरवार मर्तबे की फीलिंग

तो आवेगी ना। पद बिगर राजधानी नहीं चलती है। उंच मर्तबे से ही खुशी होती है। आमदनी भी अच्छी होती है। होशियारी बहुत अच्छी है हर बात में। फीलिंग तो रहती है ना। सुख की भी अच्छी फीलिंग आवेगी। दुःख की भी फीलिंग आती है। बाप तो कहेंगे कि पुरुषार्थ करो। उंच पद पाओ तो खुशी की फीलिंग रहेगी। बाकी यह ड्रामा तो पहले से ही बना हुआ है। बाप कहते हैं कि तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है याद करने के लिए। अपनी जांच करो कि बुद्धि का योग बाप के साथ है? बाप का नाम,रूप ,देश ,काल भी समझाया है। तुमको तीसरा नेत्र मिला है। यहां तुम जैसे देखते नहीं हो। अशरीरी हो .....जाना है। भल बाबा की तरफ देखो ;परंतु याद करना है बाप को। बाप भी तुम बच्चों को ही देखते हैं। बाप की याद को भूलना ना है। बाप उंच पद पाने लिए समझाते हैं। ऐसे ना हो कि बुद्धि बैठे–बैठे कहीं और चली जाये। बाप समझ सकते हैं कि ऐसे होते हैं। बाहर का सब याद रहता है। बाप ने समझाया है कि अपने को आत्मा समझो। उस डायरैक्शन पर कम चलते हैं। चलने से फायदा भी होगा। डायरी रखना बहुत जरूरी है। देखना है कि यज्ञ की सर्विस कितनी की। तो आपे ही लज्जा आवेगी कि हमने तो दो घंटा भी सर्विस नहीं की। यह भी तो गवर्मेंट है ना। उस गवर्मेंट की 8घंटा सर्विस करते हैं। यहां हम कितनी सर्विस करते हैं लिखने से दिखा सकते हैं। बाबा भी आफरीन देंगे। सर्विस नहीं करते तो मुफ्त में कर्जा चढ़ाते हैं। पद कम हो जाता है। फिर वो कर्जा देना पड़ता है। यज्ञ में सर्विस ना की तो दासी बनना पड़ेगा। चार्ट रखना हर हालत में अच्छा होता है। तो दिल खावेगी कि हम कितना वेस्ट टाइम करते हैं। बाप तो युक्तियां बताते हैं। टाइम वेस्ट ना करो। बाप भी रात–दिन खयालात चलाते रहते हैं। बड़े2 सेंटर खोलो। छोटे नहीं। हिम्मत बच्चों की मदद बाप की। यह है राजस्वमेध यज्ञ। सर्विस का शौक तो सबको होता है। जो बहुत सर्विस करेंगे उनका ही नाम होगा। बाप समझाते हैं कि स्टुडेंट तो हो ही। रजिस्टर रखने से तुमको अपना मालूम पड़ जावेगा हम कितना वेस्ट टाइम करते हैं। डायरी में नोट करने से बहुत पता पड़ेगा। अपनी उन्नति करनी चाहिए। डायरी शो करेगी ;क्योंकि यह तो यज्ञ है ना। बहुत बच्चे हैं जो पूरा समझते नहीं हैं। बाप तो चाहेंगे ना कि यह बच्ची उंच पद पावे। टीचर तो कहेंगे ना कि बहुत पास हो। यह तो ड्रामा में पहले से ही नूंध है। अपने चार्ट से पता पड़ेगा कि हम सारा दिन क्या करते हैं। यह खयाल में आना चाहिए कि हमने शुरू में दिया है। वो तो भविष्य का हो गया। अभी क्या करते हो?दिया सो खाते रहते हो ना। फिर तो वो सब खतम हो जावेगा। हिसाब भी है। ऐसे ना समझे कि बाबा ने बताया नहीं है। इसलिए बच्चों को चार्ट रखना बहुत जरूरी है। जांच करनी है। अच्छा,

कुछ रही हुई प्वाइंट्स– बाप तुम बच्चों को बैठ सुनाते हैं। पहले2 तो नजदीक में यह सुनते हैं। सुनाते तुमको हैं। यह सुनते हैं। बाबा डायरैक्ट हमको कैसे सुनावेंगे? तुमको सुनावेंगे तो हम भी सुनेंगे। हम अकेले को कैसे सुनावेंगे? दूसरे को सुनावें तो तब तो हम भी सुने ना। बच्चे जानते है। दिन प्रतिदिन भक्ति वृद्धि को पाती रहती है। तो सतोप्रधान से सतो,रजो,तमो में गिरते आते हैं। अव्यभिचारी भक्ति से व्यभिचारी भक्ति हो जाती है। अभी तुम एक बाप से ही सुनते हो। यह है अव्यभिचारी। बाप आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा आर्गन्स द्वारा सुनती है। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। 84जन्मों का हिसाब भी तुमको ही समझाया है। जो अच्छे पुरुषार्थी होंगे वो ही पहले आवेंगे। सारा मदार ही पुरुषार्थ पर है। पुरुषार्थ करके अच्छा जादूगर बनेंगे। नर से नारायण नारी से श्रीलक्ष्मी। लौकिक बाप से भी वर्सा मिलता है। पारलौकिक बाप से भी वर्सा मिलता है। बाकी अलौकिक से नहीं। इनके द्वारा पारलौकिक से वर्सा मिलता है। यह भी पुरुषार्थ है ना।